वर्ण विचार

वर्ण

सबसे पहले हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि वर्ण क्या है –

वर्णों को अक्षर भी कहते हैं।

वर्णों का प्रयोग बोलने या लिखने वाली ध्वनि के चिह्नों के रुप में होता है। कई वर्णों को मिलाकर एक शब्द बनता है अत: वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई है। इसके और अधिक टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं; जैसे - र् + अ = र।

इसी प्रकार यदि हमें राम शब्द का वर्ण विच्छेद करना है तो हमें इसके वर्णों को अलग-अलग करना होगा।

राम - र् + आ + म् + अ।

वर्ण :- वर्ण भाषा की उस मूल ध्वनि को कहते हैं जिसके और टुकड़े न हो सकें।

वर्णमाला :- वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी वर्णमाला में 44 वर्ण हैं। हिंदी भाषा के वर्णों को उच्चारण के आधार पर दो भागों में बाँटा जाता है -

(1) स्वर वर्ण

(2) व्यंजन वर्ण

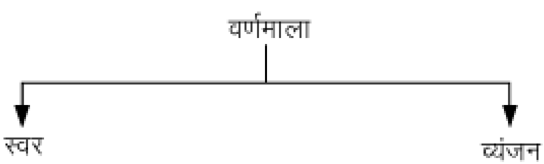

वर्णों के भेद – स्वर

स्वर :- जिन वर्णों के उच्चारण के समय हवा बिना किसी रुकावट के मुख से निकलती है, वे स्वर कहलाते हैं। हिंदी में कुल 11 स्वर हैं।

स्वर	मात्राएँ
अ	—
आ	ा

इ	ि
ई	ी
उ	ु
ऊ	ू
ऋ	ृ
ए	े
ऐ	ै
ओ	ो
औ	ौ

इसके अतिरिक्त अं और अ: अयोगवाह हैं। उच्चारण के समय की दृष्टि से स्वर के तीन भेद किए गए हैं -

1. ह्रस्व स्वर

2. दीर्घ स्वर

3. प्लुत स्वर

(1) ह्रस्व स्वर :- जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या चार हैं - अ, इ, उ, ऋ।

(2) दीर्घ स्वर :- जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(3) प्लुत स्वर :- जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। अक्सर दूर से बुलाने में इनका प्रयोग किया जाता है। लिखते समय उसी के आगे '३' का प्रयोग किया जाता है; जैसे - ओ३म, हे रा३म।

वर्णों के भेद – व्यंजन

व्यंजन

व्यंजन :- वे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय स्वरों की सहायता लेना पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 33 है। स्वरों की सहायता के बिना व्यंजन बोले नहीं जा सकते हैं। इसके निम्नलिखित तीन भेद हैं -

(i) स्पर्श

(ii) अंतस्थ व्यंजन

(iii) ऊष्म व्यंजन

(i) स्पर्श :- इन्हें पाँच वर्गों में रखा गया है। हर वर्ग में पाँच व्यंजन हैं। हर वर्ण का नाम वर्ग के पहले वर्ण के नाम पर रखा जाता है -

(क-वर्ग) – क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

(च-वर्ग) – च्, छ्, ज्, झ्, ञ्

(ट-वर्ग) – ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

(त-वर्ग) – त्, थ्, द्, ध्, न्

(प-वर्ग) – प्, फ्, ब्, भ्, म्

(ii) अंतस्थ व्यंजन :- ये निम्नलिखित चार हैं -

य्, र्, ल्, व्

(iii) ऊष्म व्यंजन :- ये निम्नलिखित चार हैं -

श्, ष्, स्, ह्

उच्चारण स्थान :- मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोला जाता है, वह भाग उस वर्ण का उच्चारण-स्थान कहलाता है। नीचे दिए तालिका में वर्णों के उच्चारण स्थान को स्पष्ट किया गया है।

कुल व्यंजन 33 होते हैं -

व्यंजन स्थान का नाम	**उच्चारण स्थान**	**वर्ण (व्यंजन)**
कंठय	कंठ (गले से बोलने वाले)	क, ख, ग, घ, ङ
ताल्वय	तालु से बोले जाने वाले	च, छ, ज, झ, ञ, य, श
मूर्धन्य	तालु के आगे का हिस्सा	ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ष
दंत्य	दाँतों का मूल भाग	त, थ, ध, ध, न

वत्सर्य	दंत मूल (जीभ का आगे का भाग दाँत के नीचे लगे)	न, स, ज, र, ल
ओष्ठय	दोनों होंठ मिलाकर	प, फ, ब, भ, म
दंतोष्ठय	निचला होंठ और ऊपर के दाँत मिलाकर	व, फ
स्वर यंत्रीय	स्वर यंत्र	ह
	संयुक्ताक्षर	श्र, त्र, ज्ञ, श्र

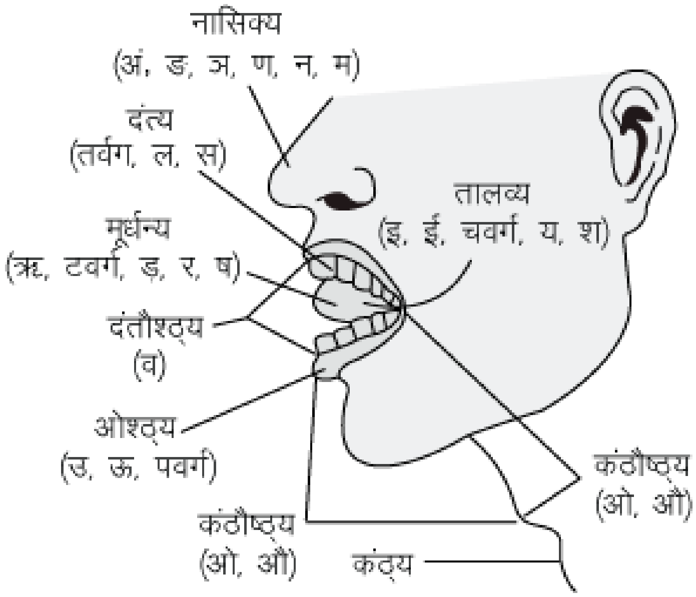

वर्ण-विच्छेद

जब वर्णों को स्वर और व्यंजन अलग-अलग कर देते हैं तो वह वर्ण विच्छेद कहलाता है। क्योंकि कोई भी व्यंजन स्वर को मिलाकर ही पूर्ण व्यंजन बनता है। यदि कोई मात्रा लगी होती है तो उस मात्रा का स्वर वहाँ आ जाता है;

जैसे - क् + अ = क आधे व्यंजन में कोई स्वर नहीं आता।

धर्म = ध् + अ + र् + म् + अ

ज्ञानी = ज् + ञ् + आ + न् + ई (ज + ञ = ज्ञ)

गंगा = ग् + अ + ङ् + ग् + आ

योग्यता = य् + ओ + ग् + य् + अ + त् + आ

चंचल = च् + अ + ञ् + च् + अ + ल् + अ

कृष्ण = क् + ऋ + ष् + ण् + अ

विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

वर्ण विच्छेद के नियम -

1. वर्ण विच्छेद करते समय पहले वर्ण लिखते हैं**,** उसके नीचे हलंत **(्)** लगाते हैं। फिर जिस की मात्रा हो उसे लिखते हैं**;** जैसे - रू = र् + उ, गै = ग् + ऐ, कि = क् + इ।

क्योंकि व्यंजन वर्णों पर मात्रा नहीं होती उनके नीचे हलंत (्) होता है और 'अ' स्वर लगा कर पूरा होता है -

क् + अ **=** क**,** र् **+** अ **=** र

2. (i) पाँचों वर्गों का अंतिम वर्ण पंचमाक्षर कहलाता है।

(ii) इसका प्रयोग अपने ही वर्ग के व्यंजन के साथ मिलकर होता है; जैसे - पम्प

(iii) परंतु आजकल अनुस्वार का प्रयोग होता है (ं) जैसे - पंप

(iv) वर्ण विच्छेद करते समय पंचमाक्षर का ही प्रयोग करना चाहिए। जिस वर्ण पर अनुस्वार (ं) लगा हो उसके अगले वर्ण का पंचमाक्षर लगा होना चाहिए;

जैसे -

कंगन = क् + अ + ङ + ग् + अ + न् + अ

कंठ = क् + अ + ण् + ठ्+ अ

इसमें 'क' वर्ण पर अनुस्वार है। (ं) की जगह 'ङ' का प्रयोग किया गया है।

<u>कुछ वर्ण विच्छेद के उदाहरण</u> -

अंबर = अं + ब् + अ + र् + अ

कामदेव = क् + आ + म् + अ + द् + ए + व् + अ

अँगूर = अँ + ग् + ऊ + र् + अ

किनारा = क् + इ + न् + आ + र् + आ

कौशल = क् + औ + श् + अ + ल् + अ

भूमि = भ् + ऊ + म् + इ

श्मशान = श् + म् + अ + श् + आ + न् + अ

पुस्तक = प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ

<u>'र' वर्ण के अलग-अलग रुप</u> -

जैसे - 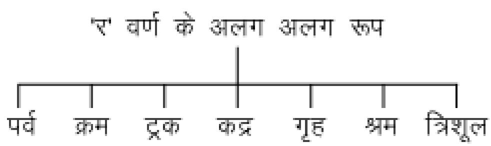

1. 'र' वर्ण जब स्वर रहित होता **(**र्**)** है तो यह व्यंजन के उपर लगता है**;** जैसे **-** प **+** अ **+** र् **+** व **+** अ **=** पर्व

यह 'रेफ' कहलाता है।

कुछ उदाहरण -

स् **+** अ **+** र् **+** व् **+** अ **=** सर्व

द् **+** उ **+** र् **+** ल् **+** अ **+** भ् **+** अ **=** दुर्लभ

द् **+** अ **+** र् **+** ज् **+** ई **=** दर्जी

न् **+** इ **+** र् **+** ल् **+** अ **+** ज् **+** ज् **+** अ **=** निर्लज्ज

स् **+** व् **+** अ **+** र् **+** ग् **+** अ **=** स्वर्ग

अ **+** र् **+** ध् **+** य् **+** अ **=** अर्ध्य

ऊपर लिखे शब्दों में 'र' जिस वर्ण से पहले बोला जाता है उसके ऊपर ही लगता है।

अर्ध्य में 'र' 'य' पर लगा है। क्योंकि र् के बाद ध् भी आधा है। इसलिए यह 'य' वर्ण पर लगा है।

2. (i) जब 'र' से पहला व्यंजन संयुक्त शब्द हो या आधा हो तो (र =र्) 'र' से पहला वर्ण पूरा लिखा जाता है इसे 'पदेन' कहते हैं; जैसे - क्रम = क् + र् + अ + म् + अ

कुछ उदाहरण - पाई सहित अर्थात क, ब, स, ग आदि।

ब्रज = ब् + र् + अ + ज् + अ

ग्राम = ग् + र् + आ + म् + अ

नम्रता = न् + अ + म् + र् + अ + त् + आ

प्रकार = प् + र् + अ + क् + आ + र् + अ

तीर्व = त् + ई + व् + र् + अ

(ii) पाई रहित अर्थात, ट, ड आदि

पाई रहित व्यंजन के बाद यदि 'र' लगा हो तो वह चिह्न (^) व्यंजन के नीचे लगता है; जैसे –
ट्रक = ट् + र् + अ + क् + अ

कुछ उदाहरण -

ट्रस्ट = ट् + र् + अ + स् + ट् + अ

ड्रामा = ड् + र् + आ + म् + आ

ट्राम = ट् + र् + आ + म् + अ

ड्रम = ड् + र् + अ + म् + अ

(iii) जब आधा 'श' (श्) जब पूरे 'र' के साथ संयुक्त शब्द बनाता है तो 'श्र' रुप में लिखा जाता है।

कुछ उदाहरण -

श्रम = श् + र् + अ + म् + अ

आश्रय = आ + श् + र् + अ + य् + अ

श्रृंगार = श् + ऋ + न् + ग् + आ + र् + अ

(iv) 'त' के साथ 'र' = 'त्र' बनता है।

त्रिशूल = त् + र् + इ + श + ऊ + ल् + अ

(v) र के साथ 'उ' और 'ऊ' की मात्रा कैसे लगाएँ

रुपा = र् + ऊ + प् + आ

रुक = र् + उ + क् + अ

रुपया = र् + उ + प् + अ + य् + आ

रुढ़ = र् + ऊ + ढ़् + अ

यदि आधे व्यंजन अर्थात् स्वर रहित व्यंजन के साथ 'ऋ' वर्ण लगे तो (ृ) का रुप होता है; जैसे - क् + ऋ = कृ

उदाहरण -

प्रकृति = प् + र् + अ + क् + ऋ + त् + इ

गृह = ग् + ऋ + ह् + अ

गृहणी = ग् + ऋ + ह् + अ + ण + ई

दृश्य = द् + ऋ + श् + य् + अ